Tender Heart High School, Sector- 33 B Chandigarh.

कक्षा - नौवीं

विषय - हिन्दी साहित्य
शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : एकांकी संचय

पाठ -1 'संस्कार और भावना' (एकांकी) लेखक - विष्णु प्रभाकर

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा नौवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य-पुस्तक 'एकांकी संचय' की पृष्ठ संख्या पाँच में दिए पाठ-1 'संस्कार और भावना' नामक एकांकी को पढ़ेंगे।

बच्चो ! पिछले सप्ताह हमने इस एकांकी को पृष्ठ-संख्या सात तक ही पढ़ा व समझा दिए। आज एकांकी को आगे बढ़ाते हुए अगले कुछ और पृष्ठों को भी पढ़ेंगे। आइए, पहले यह जान लेते हैं कि पीछे हमने क्या पढ़ा था। प्रस्तुत एकांकी मध्यवर्गीय परिवार से संबंधित एक ऐसी माँ के बारे में है जो संस्कार की बेड़ियों को तोड़ अपनी ममता के महत्त्व को समझते हुए अपने परिवार को एक कर लेती है।

माँ के दो पुत्र हैं। बड़ा बेटा अविनाश है, जिसने एक विजातीय बंगाली लड़की से विवाह किया है जो उसकी माँ को स्वीकार नही है। यही कारण है कि वह अपनी पत्नी के साथ अलग रहता है। माँ अपने छोटे बेटे अतुल और बहू उमा के साथ रहती है।

एकांकी के आरंभ में उमा आँगन में रखे एक पलंग पर लेटी पुस्तक पढ़ती हुई कुछ सोच रही थी तभी परेशान अवस्था में माँ वहाँ प्रवेश करती है और उमा को बताती है कि पड़ोस की मिसरानी से

उन्हें पता चला है कि अविनाश की तबियत बहुत खराब हुई थी। उसे हैजा हो गया था। उसकी बहू ने रात-दिन सेवा की तब कहीं उसके प्राण बच सके। दस दिन पूरे होने पर वह दफ़्तर नहीं जा पाया। यह सब जानकर माँ व्याकुल हो जाती है और सोचती है कि बचपन में अविनाश को खाँसी भी हो जाती तो वे बिना खाए-पिए दिन-रात उसकी सेवा में लगी रहती थी और आज अपने बेटे की बीमारी की बात उन्हें दूसरों से पता चल रही है।

बच्चो! अब हम पृष्ठ संख्या आठ से एकांकी को पढ़ना व समझना आरंभ करते हैं। उमा के आश्चर्यचकित होकर बोलने पर कि बड़े भाई अविनाश की बीमारी की खबर उसके पति अतुल को नहीं हुई तब माँ कहती हैं कि यदि उसे अर्थात् अतुल को पता भी होता तो वह उन्हें नहीं बताता क्योंकि माँ अपने बेटों के स्वभाव को भली भांति जानती है तभी वे कहती हैं कि मेरे ही तो बेटे हैं। दोनों बेटों में मोह-माया और ममता जैसे गुणों का अभाव था। वे दोनों हर बात में देश, धर्म और कर्तव्य की दुहाई देते थे। वे व्यक्तिगत परेशानियों को महत्त्व नहीं देते थे अर्थात् उन्होंने सदैव ही मोह-ममता, भावनाओं को देश, धर्म एवं अपने कर्त्तव्यों से नीचे स्थान दिया है। दोनों पुत्रों के लिए देश तथा उनके कर्तव्य भावनाओं से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। माँ ने अपने पति को निर्मम कहा क्योंकि जब उनका छोटा बेटा अतुल बहुत बीमार हुआ था। उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं थी। माँ अपने पुत्र की अस्वस्थता को लेकर चिंतित थी। उसका खूब इलाज करवाया गया पर वह ठीक नहीं हो रहा था। माँ की ममता उसे व्याकुल किए जा रही थी। वह किसी अनहोनी के प्रति आशंकित थी क्योंकि उसके स्वस्थ होने के लक्षण दिखाई नहीं दे रहे थे। उस समय में भी अतुल के

पिता शांत चित्त होकर अतुल को ज़मीन पर लिटाने के लिए सामान हटा रहे थे। बेटे की इतनी खराब हालत देखकर रोते नहीं थे बल्कि मुझे ही माया-ममता में फँसी कहकर कोसते थे। ठीक उसी प्रकार आज अविनाश का लगाव अपनी माँ से अधिक अपनी पत्नी के प्रति है इसलिए माँ ने उमा से कहा कि आखिर अविनाश और अतुल के पिता भी तो इनकी तरह निर्मम थे। उन्होंने ' माँ के भावुक होने की सदैव निंदा की है।

माँ की बातें सुनकर उमा की करुणा खीझ से फिर हल्के रोष में बदल जाती है। उमा माँ से कहती है कि इसमें सब दोष भाभी का है, वह अविनाश की पत्नी के सौंदर्य की प्रशंसा करते हुए माँ से कहती है कि भाभी अर्थात् अविनाश की बहू बहुत भोली और बहुत प्यारी है। उनका रूप सौन्दर्य और व्यवहार देखकर तो उमा आश्चर्यचकित हो गई थी। जो एक बार अविनाश की बहू को देख लेता है, वह फिर उस रूप को भुला नहीं पाता। उमा के अनुसार उनकी (अविनाश की बहू की) बड़ी-बड़ी काली आँखें, बच्चों जैसी भोली मुस्कुराहट, लज्जा से लाल गालों पर रहने वाली हँसी। उन्हें एक बार नहीं बार-बार देखने को मन करता है। उमा ने माँ को बताया कि वह भाभी का रूप देखकर चौंक गई। सचमुच बंगाली बहुत सुन्दर होते हैं। दूसरी ओर जब उसने उनका व्यवहार देखा तो वह प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकी।

उमा माँ को बताती है कि माँ की हालत देखकर जब उसे दुःख होता है तो एक बार वह बड़ी बहू को समझाने गई थी। अविनाश की बहू ने उमा का स्वागत अत्यंत निश्छल हृदय और प्रेम से किया था। पहले उसने अपने आँचल को लपेटकर उसे प्रणाम किया जब उमा ने अपना परिचय दिया तो प्रेम से

उसे अपने हृदय से लगा लिया।

जब माँ उमा से पूछती है कि तूने इसके बारे में कभी नहीं बताया तो उमा कहती है कि चूँकि आप उसके कारण आप दुःखी रहती थी इसलिए मैं भाभी के पास गई थी। उमा बड़ी बहू को माँ के दुःख का कारण मानती थी। उसी के कारण अविनाश अपनी माँ से अलग अन्यत्र रहता था। उमा ने भाभी से जाकर कहा कि तुम्हारे कारण अविनाश ने अपनी माँ को छोड़ दिया और अपनी पत्नी से अलग रहने लगा। उमा का मानना है कि माँ को बेटे से अलग करने के लिए दोषी उसकी पत्नी है।

उमा ने भाभी से कहा कि यदि तुम अपने पति अविनाश को छोड़ दो तो सब ठीक हो सकता है। बड़ी बहू ने उमा के सुझाव को मानने से इन्कार कर दिया। वह अपने पति को बहुत प्यार करती थी और पति के कहने पर जान दे सकती है पर उसे दुःखी कर किसी और को सुखी करने की कल्पना भी नहीं कर सकती है।

उमा की बातों को सुनकर माँ आश्चर्यचकित हो जाती है। माँ को लगता था कि अब कोई उससे मिलता नहीं होगा। उमा द्वारा बड़ी बहू के घर जाने की बात सुनकर माँ आश्चर्यचकित रह जाती है।

उमा ने अविनाश की पत्नी को यह सुझाव दिया कि यदि वह चाहे तो अब भी अविनाश और उसकी माँ का मिलन हो सकता है। यदि अविनाश की पत्नी नहीं चाहती तो अविनाश अपनी माँ को कैसे छोड़ देते? उमा ने अविनाश की पत्नी से कहा कि यदि वह अपने पति को छोड़ दे तो सब कुछ ठीक हो सकता है।

बच्चो! आज हम अपनी इस एकांकी को यहीं विराम देते हैं। सभी छात्र इस एकांकी को पृष्ठ-

संख्या - 9 तक ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे व समझेंगे।

गृहकार्य

निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

"अपराध और किसका है। सब मुझी को दोष देते हैं।"

प्रश्न (i) वक्ता और श्रोता कौन - कौन हैं ? परिचय दीजिए।
प्रश्न (ii) वक्ता अपने किस अपराध की ओर संकेत कर रहा है ?
प्रश्न (iii) सब वक्ता को किस बात के लिए दोष देते थे ?
प्रश्न (iv) मिसरानी ने वक्ता को किसके बारे में क्या बताया ?

धन्यवाद।

(अंतिम पृष्ठ)